

॥ॐ॥

## ॥काल भैरव अष्टक ॥

देवराजसेव्यमानपावनांग्रिपङ्कजं  
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।  
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १ ॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं  
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।  
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २ ॥

[SriKubereshwarDham.com](http://SriKubereshwarDham.com)

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं  
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।  
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३ ॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं  
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।  
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४ ॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशनं  
कर्मपाशमोचकं सुशर्मधायकं विभुम् ।  
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांगमण्डलं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५ ॥

॥ॐ॥

## ॥काल भैरव अष्टक ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं  
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।  
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं  
दृष्टिपात्तनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।  
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७॥

[SriKubereshwarDham.com](http://SriKubereshwarDham.com)

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं  
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।  
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं  
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८॥

### ॥ फल श्रुति ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं  
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।  
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं  
प्रयान्ति कालभैरवांग्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम् ॥

॥इति कालभैरवाष्टकम् संपूर्णम् ॥